सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: २०२४-२०२५

कक्षा:-पाँचवीं **विषय: हिंदी** **पाठ:२ ओणम बहार**

कठिन शब्द

१-श्रावण

२-खलिहान

३-पौराणिक

४-त्यागी

५-वामन

६-तपस्वी

७-कृपया

८-अनुमति

९-प्रसन्नता

१०-विश्वास

११-स्वागत

१२-विसर्जित

१३-प्रीतिभोज

१४-सर्पाकार

१५-दर्शक

१६-पर्यटक

१७-उत्सव

१८-उल्लास

लघूत्तरीय प्रश्न

उ०१-वामन के रूप में विष्णु जी ने महाबली से तीन पग भूमि माँगी।

उ०२-इंद्रदेव को इस बात की चिंता थी कि महाबली उनका आसन न छीन लें।

उ०३-विष्णु जी द्वारा महाबली के सिर पर पैर रखते ही महाबली पाताल लोक में चले गए।

उ०४-यह पर्व श्रावण मास में मनाया जाता है, तब तक धान की फसल कट चुकी होती है तथा खलिहान धन से भरे होते हैं।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

उ०१-वामन ने अपने पहले पग में महाबली से पूरा आकाश दूसरे पग में पूरी पृथ्वी माँगी तथा तीसरा पग रखने के प्रश्न पर महाबली ने अपना सिर वामन के समक्ष झुका दिया।

उ०२-समुद्र की विशाल छाती पर जब सजी-धजी सर्पाकार नौकाएँ एक दूसरे से होड़ करती हैं तो किनारे पर खड़े दर्शक तालियाँ बजा - बजाकर खुशी से चिल्लाते हैं बहुत से विदेशी पर्यटक भी यह उत्सव देखने आते हैं।

उ०३-ओणम पर्व पर सुबह से ही घरों में महाबली के स्वागत की तैयारी होने लगती हैं। लोग अपने-अपने घरों के सफाई करते हैं और उन्हें सजाते हैं महिलाएँ अपने घरों के आगे रंगोली बनाती हैं। परिवार का मुखिया हर सदस्य को नए वस्त्र देता है।

उ०४-राजा महाबली ने विष्णु जी से वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने की अनुमति माँगी।

रिक्त स्थान

१-ओणम को मनाने के पीछे एक <u>पौराणिक</u> मान्यता है।

२-विष्णु जी <u>वामन</u> का रूप धारण कर महाबली के पास पहुँचे।

३-यज्ञ में जो भी <u>तपस्वी</u> आता , राजा उसे मुँह माँगा दान देते थे।

४-केरलवासी अपने राजा के <u>स्वागत</u> में ओणम का त्योहार मनाते हैं।

५-ओणम के दिन चावल से तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं।

वाक्य प्रयोग

१-पौराणिक (पुराण संबंधी)

मेरी दादी मुझे पौराणिक कथाएँ सुनाती हैं।

२-तपस्वी (तप करने वाला)

हिमालय पर्वत पर आज भी तपस्वी पाए जाते हैं।

३-अनुमति (आज्ञा)

बच्चों को अपने माता-पिता की अनुमति के बिना कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए।

४-उत्सव (त्योहार)

श्री राम प्राण प्रतिष्ठा का दिन उत्सव की तरह मनाया गया।

५-उल्लास (खुशी)

पर्वतीय यात्रा पर जाते समय मेरे मन में बहुत उल्लास था।